9

क्षमा पाया हुआ क्षमा न करने वाला सेवक

(मत्ती 18:21-35)

बदला हुआ जीवन यीशु द्वारा बताई कहानी में क्षमा का जीवन है ...।

मत्ती 18 अध्याय क्षमा के विषय में है यीशु ने एक चरवाहे की बात बताई जिसकी एक भेड़ खो गई थी और वह उसे ढूंढ़ने के लिए निकल पड़ा। मिल जाने पर उसने ''उन निन्यानवें भेड़ों सें बढ़कर जो भटकी नहीं थी'' यह दिखाता है कि परमेश्वर पापियों से कितना प्रेम रखता और उन्हें क्षमा करना चाहता है।

फिर यीशु ने बताया कि जब कोई कोई भाई आपसे पाप करे तो क्या किया जाए। ''यदि वह तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पाप लिया।'' यदि वह नहीं सुनता तो दो या तीन लोगों से बात कर। यदि वह नहीं सुनता तो इसे कलीसिया को बताओ। यह प्रक्रिया उसका मन फिराव और क्षमा तक लाने के लिए है। इसमें यह विचार है कि पापी को जब वह मन फिराए तो उसे माफ़ करे (मत्ती 18:15-20)।

यह पढ़कर हम इसकी कठोरता से प्रभावित होते हैं। पौलुस नहीं हुआ था। वह इस तथ्य से प्रभावित हुआ था कि पश्चात्तापी पापी को क्षमा किया जाए। परन्तु वह चकित था कि वह क्षमा कहां तक बढ़ाई जा सकती है।

> पतरस ने पास आकर, उस से कहा, हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं, क्या सात बार तक? यीशु ने उस से कहा, मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बात, बरन सात बार से सत्तर गुणा तक (मत्ती 18:21, 22)।

ये सुझाव देते हुए कि उसे अपने विरुद्ध पाप करने वालों को सात बार क्षमा करना चाहिए। पतरस यहूदी धर्म के रब्बियों की सलाह से आगे बढ़ गया। उनका कहना था कि किसी को तीन बार क्षमा कर देना चाहिए, चार बार क्षमा नहीं।[1] यीशु ने कहा, ''ये नहीं कि सात बार, वरन सात बार से सत्तर गुणा तक।''

यीशु के कहने का अर्थ यह नहीं था कि हमें अपने विरुद्ध पाप करने वालों के पापों का हिसाब रखने के लिए एक कॉपी रखनी चाहिए। ताकि हम पूरे 490वीं बार क्षमा कर सकें, इससे अधिक नहीं। उसके कहने का यह अर्थ नहीं था कि आप चार सौ नब्बे बार मेरा पाप करें तो मुझे आपको क्षमा करना आवश्यक है परन्तु 490वें बार होने पर मैं कह सकता हूं, ''वाह! एक बार अब बहुत हो गया! मैं तुम्हें अब उस एक बार के लिए क्षमा नहीं दूंगा!'' उसके कहने का अर्थ था कि जितनी बार पाप हो उतनी बार क्षमा की जाए, यानी हमें क्षमा करते रहना चाहिए, चाहे हमारे विरुद्ध दूसरे कितनी भी बार पाप क्यों न करें।

फिर इस सबक को क्षमा पर लागू करते हुए यीशु ने एक आदमी की कहानी बताई जिसे उसका बड़ा कर्ज़ क्षमा किया गया था परन्तु उसने छोटा सा कर्ज़ क्षमा करने से इनकार कर दिया। वह *क्षमा न करने वाला क्षमा प्राप्त सेवक* था। हम कहानी में उसे अलग अलग चरणों में चार तरह से क्षमा के सम्बन्ध में देखते हैं।

वह क्षमा न करने वाला सेवक था

आयत 23 में हम पढ़ते हैं, ''इसलिए स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपने दासों से लेखा लेना चाहा।'' दृष्टांत वाला राजा परमेश्वर को दर्शाता है। इस प्रकार कहानी हमें याद दिलाती है कि परमेश्वर हमें जिम्मेदार ठहराता है। वह हमें जानता है; वह मारे पापों को जानता है; वह हमारे हिसाब के लिए हमारे पापों का आरोप लगाता है और एक दिन वह न्याय के दिन हर उस काम के लिए हर उस काम का जो हम ने किया है चाहे वह अच्छा हो या बुरा, ''हिसाब देने के लिए'' बुलाएगा (रोमियों 2:6; प्रकाशितवाक्य 20:12; सभोपदेशक 12:13)।

आयत 24 से हमें पता चलता है कि ''जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उस के सामने लाया गया जो दस हजार तोड़े का ऋणी था।'' जो बात हमें तुरन्त प्रभावित करती है वह वह राशि है जो उस आदमी ने चुकानी थी: दस हज़ार तोड़े!

मेरी बाइबल में टिप्पणी में कहा गया है कि तोड़ा सम्भवतया तोड़ा डॉलर 1,000 के मूल्य का होगा। यह एक संतुलित अनुमान है। अधिकतर टीकाकारों कहना है कि तोड़ा यदि मान लिया जाए कि यह चांदी का तोड़ा था तो डॉलर 1,600 या डॉलर 1,700 डॉलर के मूल्य या जो हम आंक रहे हैं उससे 60 या 70 प्रतिशत अधिक होगा। इसके अलावा उनका कहना है कि यदि यहां तोड़ा सोने का है तो इसका मूल्य बीस गुणा से भी बढ़ जाएगा! यह प्रत्येक तोड़े का मूल्य डॉलर 34,000 बना देगा जो हमारी गणना से चौंतीस गुणा अधिक है। परन्तु हम तोड़े की कीमत के रूप में डॉलर 1,000 का संतुलित आंकड़ा ही इस्तेमाल करेंगे। उस दर पर वह डॉलर 1,00,00,000 का कर्ज़दार था। यह आंकड़ा हमारी कल्पना से बहुत दूर है। जीवित लोगों में सबसे धनवान व्यक्ति भी सोचेगा कि डॉलर 1,00,00,000 का कर्ज़ बहुत बड़ा है।

परन्तु यह कहानी का केवल एक भाग है। उस समय का डॉलर 1,00,00,000 आप के डॉलर 1,00,00,000 से कहीं अधिक होगा। वास्तव में दीनार स्पष्ट रूप में एक दिन की मज़दूरी की कीमत थी, जैसा कि दाख की बारी में किसानों के दृष्टांत में किसानों को दी गई कीमत थी (मत्ती 20:16) [2] परन्तु इसका अर्थ यह है कि उस आदमी ने अपने आदमी को 5,00,00,000 दिनों के काम की मज़दूरी के बराबर का का कर्ज़ देना था। मान लें कि औसतन मज़दूरी डॉलर 250 प्रति सप्ताह है। इसे पांच से भाग करें तो इसका अर्थ है कि डॉलर 50 औसत दिन का वेतन है। उसे 5,00,00,000 दिनों से गुणा करें तो आपका कुल जोड़ 2,50,00,00,000 होता है। इस आदमी ने अपने स्वामी का कर्ज़ देना था जो आज के 2,50,00,00,000 कर्ज़ के बराबर था।

हम इससे क्या सीखते हैं? *इस आदमी का कर्ज़ उस के चुकाने की योग्यता से कहीं बढ़कर है!*

वह ऐसी परिस्थिति में कैसे पड़ा? कोई नहीं जानता। किसी ने कहा है कि कहानी वाला सेवक राजा का दरबारी हो सकता है जिसने अपने टैक्सों में हेराफेरी की या राज्य के कोष को

चुराया था। परन्तु ऐसा लगता नहीं है कि इससे भी इतना बड़ा कर्ज़ हो जाए। एक आदमी ने लिखा है:

> यह कल्पना करने के लिए कि यह कर्ज़ कितना बड़ा था, फलस्तीन के पांच राज्यों (यहूदिया, पिरिया, इदुमिया, सामरिया और गलील) की कुल टैक्स की आमदन केवल आठ सौ तोड़े थी। अन्य शब्दों में इस सेवक का कर्ज़ राष्ट्रीय बजट की राशी थे दस गुणा से अधिक था।[3]

कोई आदमी इतना कर्ज़दार कैसे हो सकता है मुझे लगता है कि इसका उत्तर यह है कि वह नहीं हो सकता! आदमी के लिए कर्ज़ में इतना डूब जाना असम्भव था!

यीशु ने ऐसे रूपक का इस्तेमाल क्यों किया? वह दिखाना चाहता था कि स्वर्ग राज्य में क्षमा ऐसी होती है (मत्ती 18:23)। अपने सुनने वालों को परमेश्वर की क्षमा के महत्व को समझाने के लिए उसे उन्हें कर्ज़ की मात्रा को समझाना आवश्यक था जिससे उन्हें परमेश्वर की संतान बनने पर क्षमा मिलती है।

तो फिर इसमें सबक यह है कि अपने पाप के कारण हम भी कर्ज़ में निराशाजनक ढंग से डूबे हैं। पाप इतना भयंकर है कि यह सर्वशक्तिमान परमेश्वर को यहां तक कि दुख देता है कि हम अपने आप में कभी इसे सही नहीं कर सकते। हम उसके इतने कर्ज़दार हैं कि हम यह कर्ज़ चुका नहीं सकते!

आयत 25 में हम पढ़ते हैं: ''जब कि चुकाने को उस के पास कुछ न था, तो उस के स्वामी ने कहा, कि यह और इस की पत्नी और लड़के बाले और जो कुछ इसका है सब बेचा जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए।'' वह यह कर्ज़ कितनी देर में चुका सकता था? मान लें कि 1,00,00,000 डॉलर के बराबर था। 5 प्रतिशत ब्याज के हिसाब से साल का ब्याज ही डॉलर 5,00,000 बनता है। जेल में रहकर वह यह राशि कैसे चुका सकता है? यदि ''बाहर से'' उसके लिए एक सौ लोग काम भी करते तो भी वे उसके कर्ज़ का ब्याज चुकाने की स्थिति में नहीं होते। तथ्य यह है कि उसके पास वह चुकाने का अवसर नहीं था जिसका वह देनदार था। वह अपने शेष जीवन जेल में था। *उसका दण्ड उम्र भर का था।*

यह ही हमारे ऊपर लागू होती है क्योंकि हमारा पाप इतना भयंकर है कि इसका सही दण्ड केवल नरक है। वहां हम उस कर्ज़ को चुकाने की स्थिति में कभी नहीं होंगे। *इसलिए हमारा दण्ड उस सेवक की तरह, उम्र भर उसके दण्ड को छोड़, सदा के लिए है!*

इस प्रकार हमें इस दृष्टांत में एक क्षमा न पाए हुए पापी की बिल्कुल सही तस्वीर मिलती है: उसने पाप किया है, क्योंकि सबने पाप किया है (रोमियों 3:23)। परमेश्वर उसे उसके पाप के लिए ज़िम्मेदार ठहराता है। उसका पाप इतना भयंकर है कि उसका कर्ज़ इतना बढ़ जाता है जिसे वह कभी चुका नहीं सकता। वह निराशापूर्ण ढंग से खो चुका है। वह परमेश्वर से उन पापों के लिए जो उसने उसके विरुद्ध किए हैं कुछ करने के लिए नहीं कह सकता। अन्त में परमेश्वर उसे अपने पाप का हिसाब देने और उसे उस पाप का दण्ड देता है। वह दण्ड क्या है? ''पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है'' (रोमियों 6:23)। वह मृत्यु नरक में सदा के लिए परमेश्वर से दूरी है! कितनी दुखद तस्वीर है! परन्तु कहानी यहां खत्म नहीं होती। हम उस आदमी को एक

और स्थिति में देखते हैं।

वह क्षमा पाया हुआ सेवक था

आयत 26 में हम पढ़ते हैं: ''इस पर उस दास ने गिर कर उसे प्रमाण किया, और कहा, हे स्वामी धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा।'' यह देखना कठिन है कि उसे कैसा लगा कि वह कभी कुछ दे पाएगा। तौभी उसने इस बात को देखा कि क्षमा पाने का उसका एकमात्र अवसर अपने आपको दयालु स्वामी के आगे दया की भीख मांगने के लिए गिरा देना है।

हमारा भी केवल यही अवसर है। हम अपने भले कामों के लिए उद्धार नहीं पा सकते। *उद्धार पाने का हमारा एकमात्र ढंग अपने आपको अपने दयालु परमेश्वर की दया के आगे गिराना है।* जब आप क्षमा पाने के लिए तैयार होते हैं तो परमेश्वर के सामने इस व्यवहार के साथ न आएं: ''परमेश्वर, देख ले, मैं कितना अच्छा आदमी हूं। मैं बस बहुत धार्मिक ही नहीं हूं। अत: में मैंने तेरे सामने झुकने का और कलीसिया का भाग बनने का निर्णय ले लिया है। मुझे लगता है कि हम इस मामले पर सौदेबाजी कर सकते हैं। मैं बपतिस्मा ले लूंगा यदि तू मेरे पाप क्षमा कर दे। फिर मैं दूसरी ओर हो जाऊंगा और तुझे बड़ी खुशी होगी कि मैं तेरी ओर हूं।'' क्षमा पाने का यह कोई तरीका *नहीं* है! क्षमा पाने के लिए आपको यह मानते हुए कि आप परमेश्वर के इतने बड़े कर्ज़दार हैं कि आप उसका कर्ज़ कभी चुका नहीं सकते, यह कहते हुए आना आवश्यक है कि ''मैं छुछे हाथ आता हूं; बस तेरे क्रूस के साथ जुड़ता हूं।'' आपको उस चुंगी लेने वाले की तरह प्रार्थना करते हुए ''हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर'' गिड़गिड़ाते हुए आना आवश्यक है। आपको उड़ाऊ पुत्र की तरह ''मैंने स्वर्ग के विरुद्ध पाप किया है। ... मैं इस योग्य नहीं हूं ...'' कहते हुए आना आवश्यक है।

बेशक आपके लिए मसीह के पास बाइबल में बताए गए परमेश्वर के ढंग के अनुसार आना आवश्यक है: यीशु में विश्वास करते (यूहन्ना 8:24), अपने विश्वास का अंगीकार करते (मत्ती 10:32), अपने पापों से मन फिराते (लूका 13:3) और उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा लेते हुए (मरकुस 16:16)। परन्तु ये सब बातें करते हुए आपको इन्हें ऐसे *नहीं* करना है जैसे आप परमेश्वर के साथ कोई सौदा कर रहे हों। यानी यह कि मैं अपने साथ इतने कर्म लेकर आया हूं और तू मुझे इतना सारा उद्धार दे दे। आपको ये काम इस प्रकार करने होंगे जैसे आप यह समझते हुए आप जो कुछ भी करें उससे आप अपने उद्धार को कमा *नहीं* रहे, परमेश्वर की दया की याचना और भीख मांगना है।

आयत 27 कहती है, ''तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया और उसका ऋण क्षमा किया।'' इसमें अच्छी खबर है! राजा ने वह कर्ज़ माफ़ कर दिया और सेवक को अब उसे चुकाने की आवश्यकता नहीं होगी। अपने ऊपर लागू करें तो यह उसे अनुग्रह किया जाता है। *हमारा उद्धार होने के समय परमेश्वर हमें उससे कहीं अधिक क्षमा कर देता है जिसके हम हक़्क़दार होते हैं!* वह हम पर ऐसी कृपा करता है जिसे हम ने कमाया नहीं है। वह उस कर्ज़ को रद्द कर देता है जो हम ने कभी चुकाया नहीं और न चुका सकते थे और उसे चुकाने की कोई उम्मीद भी नहीं थी!

ध्यान दें कि कहानी में राजा ने सेवक को कर्ज़ चुका देने के *बाद* क्षमा नहीं किया। न ही

परमेश्वर हमें हमारे उसका कर्ज़ मिटाने के लिए कुछ किए जाने के बाद ही कुछ करता है। वह हमारे सनातन नरक में उनकी कीमत चुकाने के बजाय हमारे पापों के दोष की कीमत के रूप में मसीह के लहू को स्वीकार कर लेता है। (देखें तीतुस 3:5.)

परन्तु कहानी यहां खत्म नहीं हो जाती। दुख के साथ कहना पड़ता है कि क्षमा पाने के बाद यह सेवक किसी दूसरे को क्षमा पा लेने के बाद नाकाम रहा।

वह क्षमा न करने वाला सेवक था

आयत 28 में हम पढ़ते हैं: ''परन्तु जब वह दास बाहर निकला, तो उस के संगी दासों में से एक उस को मिला, जो उस के सौ दीनार का ऋणी था। उस ने उसे पकड़ कर उस का गला घोंटा, और कहा, जो कुछ तेरे ऊपर ऋण है भर दे।'' कितना बदमाश है! उसे क्षमा किया गया था। उसे तो आनन्द करना चाहिए था। उसे हर किसी के प्रति अच्छा अहसास करना चाहिए था। उसे अपने कर्ज़दारों को यूं ही माफ़ कर देना चाहिए था।

परन्तु वह राजा के पास से आकर सीधा उस आदमी के पास गया जिसका उसने कुछ देना था। उसने उसे गर्दन से पकड़ा और गला दबाकर कहने लगा कि ''जो कुछ तेरे पास ऋण है उसे भर दे!''

तथ्य यह है कि उसने केवल 100 दीनार देने थे। यह शायद आज के लगभग 20 डॉलर या 1,000 रूपये कि जितना होगा। या यह एक सौ दिन की मज़दूरी होगी। आज यह कर्ज़ 5,000 डॉलर के करीब होगा। यह काफ़ी बड़ी राशी है पर यह ऐसा यह कर्ज़ है जिसे चुकाया जा सकता है। परन्तु महत्वपूर्ण बात इस और उस कर्ज़ के अन्तर में है जो उस आदमी को क्षमा किया गया था। 20 डॉलर के कर्ज़ की तुलना 1,00,00,000 के कर्ज़ से करें! उसने जो उसे क्षमा किया गया था उसके 1 प्रतिशत का 2,10,000 लेना था!

हमें इससे क्या सबक मिलता है? यही कि *हमें जो भी क्षमा करने के लिए कहा जाता है उससे जो परमेश्वर ने हमें क्षमा किया है उसको मिलाया नहीं जा सकता।* परन्तु जितने आपके विरोध में दूसरों के पाप हों, परमेश्वर के विरुद्ध आपके पाप उससे असीमित रूप से अधिक थे और हैं! तो फिर क्या आपको दूसरों की गलतियों को जो उन्होंने आपके विरुद्ध की हैं क्षमा करने को तैयार नहीं रहना चाहिए?

अगली दो आयतों में हम पढ़ते हैं: ''इस पर उस का संगी दास गिर कर, उस से बिनती करने लगा। धीरज धर, मैं सब भर दूंगा। उस ने न माना, परन्तु जाकर उसे बन्दीगृह में डाल दिया कि जब तक कर्ज भर न दे, तब तक वहीं रहे।'' हमारी कहानी वाले सेवक को क्षमा किया गया था, पर वह क्षमा नहीं कर रहा था। उसने अपने आपको राजा की जगह देखा। उसके पास क्षमा करने की सामर्थ थी। परन्तु उसने राजा के नमूने से कुछ नहीं सीखा था। जब वह राजा के कदमों में गिरकर गिड़गिड़ाया था तो राजा ने उसे क्षमा कर दिया था। जब उसका संगी सेवक उसके आगे गिड़गिड़ाया तो उसने उसे क्षमा करने से इनकार कर दिया।

कई बार हम ऐसे होते हैं *जैसे हमें क्षमा किया गया हो, पर हम क्षमा करने से इनकार कर* देते हैं। कोई मेरा अपमान करता है। उस अपमान को क्षमा करने के बजाय मुझे यह याद रहता है और अगली बार उससे मिलने पर मैं उसका अपमान कर देता हूं। हो सकता है कि मुझे लगे कि

दफ़तर में किसी दूसरे ने कोई सिफ़ारिस लड़ाकर वह तरक्की पा ली जिसका मैं हक्कदार था। सो मैं उसे उस नये काम में बाधा डालने के लिए जो कुछ हो सके करता हूं।

यह कलीसिया में भी होता है: ''वे मुझे कलास में पढ़ाने नहीं देंगे, और वे बीमार होने वाले हर व्यक्ति का नाम घोषित करेंगे पर मेरे बीमार होने पर कोई कभी मेरा नाम नहीं लेता। मैं उन्हें दिखा दूंगा; मैं उन्हें क्षमा नहीं करूंगा। उन्हें अपने किए पर शर्मिंदा होना पड़ेगा। मैं हर तरह से उन्हें परेशान करूंगा।'' *हमें इतना अधिक क्षमा किया गया है, परन्तु हम क्षमा करने से इनकार कर देते हैं चाहे हमारे विरुद्ध किए जाने वाले* ''पाप'' बहुत छोटे हैं।

आयत 31 में हम पढ़ते हैं: ''उसके संगी दास यह जो हुआ था देखकर बहुत उदास हुए, और जाकर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया।'' जब मसीही लोग क्षमा नहीं कर पाते तो यह कहकर दुखी होना सही है। परन्तु यहां मुख्य बात यह है कि राजा ने जाना। *और हमारा राजा यानी परमेश्वर जानता है कि हम क्षमा कर नहीं कर पाते!*

यह हमें उस सेवक के अगले चरण में ले आता है।

वह क्षमा न किया जा सकने वाला सेवक बन गया

जब तक वह क्षमा करने से इनकार करे तब तक उसे क्षमा नहीं किया जा सकता था।

आयतें 32 और 33 कहती है, ''तब उसके स्वामी ने उसको बुलाकर उससे कहा, हे दुष्ट दास, तूने मुझसे बिनती की तो मैंने तो तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा किया। सो जैसा मैं ने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया नहीं करनी चाहिए थी?'' तर्कसंगत यही था कि यह आदमी जिसे क्षमा किया गया था दूसरों के साथ भी वैसी ही क्षमा को दिखाए।

तर्कसंगत केवल यही है कि हम, जिन्हें परमेश्वर द्वारा क्षमा किया गया है, दूसरों को वैसे ही क्षमा करें! हमें ऐसा करने की आज्ञा है: ''तो एक दूसरे की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो'' (कुलुस्सियों 3:13)। हमें दूसरों से वैसे ही प्रेम करें जैसे परमेश्वर हम से प्रेम करता है और दूसरों को वैसे ही क्षमा करें जैसे परमेश्वर ने हमें क्षमा किया है।

परन्तु हम आपत्ति कर सकते हैं: ''वह इतना अच्छा नहीं है कि मैं उसे क्षमा करूं।'' जब परमेश्वर ने हमें क्षमा किया तो हम कितने अच्छे थे? या: ''उसने मेरे साथ इतनी अधिक बुराइयां की हैं कि मैं उसे क्षमा नहीं कर सकता।'' परन्तु हम ने परमेश्वर की कितनी बुराइयां की थीं। वे दस हज़ार दीनारों के कर्ज़ जैसी ही थीं। यीशु को कोढ़े मारे गए, उसके ऊपर थुका गया, उसे ठट्ठा किया गया, उसे थप्पड़ मारे गए और उसे क्रूस पर दिया गया। पर वह फिर भी क्षमा करने को तैयार था। या: ''पर वह कभी मेरे पास क्षमा मांगने नहीं आया कि मैं उसे क्षमा कर दूं।'' क्या किसी ने कभी यीशु के यह प्रार्थना करने से पहले कि ''हे पिता इन्हें क्षमा कर क्योंकि यह नहीं जानते कि यह क्या करते हैं उससे क्षमा करने को कहा था''?

अन्य शब्दों में, क्षमा न करने की हमारी अनेच्छा कोई बहानी नहीं है। जैसे परमेश्वर हमें क्षमा करने को तैयार था वैसे ही हमें दूसरों को क्षमा करने के लिए तैयार रहना आवश्यक है!

आयत 34 कहती है: ''और उस के स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देने वालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्ज भर न दे, तब तक उन के हाथ में रहे।'' क्षमा न करने

वाला होने के क्या परिणाम हैं? पहला तो यह कि *जब हम क्षमा नहीं कर पाते तो हम परमेश्वर को नाराज करते हैं!* परमेश्वर को नाराज करना खतरनाक बात है। नाराज परमेश्वर क्रोध से भरा है और ''जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है'' (इब्रानियों 10:31)। दूसरा, *जब हम क्षमा नहीं कर पाते तो हम भी उसी दण्ड के योग्य होंगे जो परमेश्वर ने आरम्भ में हमारे पाप के लिए ठहराई है।* राजा ने वह क्षमा जो दी थी वापस ले ली और उस सेवक को कालकोठरी में डाल दिया जब तक वह अपने कर्ज़ की पाई पाई न चुका दे। यह कितनी देर तक होना था? सदा के लिए! उससे कर्ज़ कभी चुकाया नहीं जाना था। यही बात हमारे लिए भी है। जब हम क्षमा नहीं कर पाते तो हम भी उसी दण्ड अर्थात सज़ा के भागी होते हैं।

आयत 35 में हम पढ़ते हैं: ''इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करे, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुमसे भी वैसा ही करेगा।'' हमें दी गई परमेश्वर की क्षमा हमारे दूसरों को क्षमा करने पर निर्भर है। और हमारी क्षमा *दिल से* होनी आवश्यक है। यदि हम क्षमा करने से इनकार करते हैं तो हमें भी क्षमा नहीं किया जाएगा (मत्ती 6:14, 15)। हम सभी को पहले तो उद्धार पाने के लिए परमेश्वर की दया, अनुग्रह और क्षमा की और फिर उद्धार पाए हुए रहने की आवश्यकता है।

सारांश

हमने कहानी वाले इस सेवक के चार चरणों की बात की है: पहला, उसे क्षमा नहीं किया गया था; दूसरा, उसे क्षमा किया गया था; तीसरा, वह क्षमा न करने वाला था; चौथा, वह क्षमा के योग्य नहीं था। मुझे नहीं लगता कि हर किसी को इन वर्गों में डाला जा सकता है। आप को किस वर्ग में डाला जाए?

याद रखें कि यदि आपको क्षमा नहीं किया गया है, तो परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और आपको क्षमा करना चाहता है, आपको अपने पाप चाहे कितने भी भयंकर लगते हों। परन्तु यह भी याद रखें कि यदि आप केवल उसके वचन में बताए गए तरीके से आएं, तो ऐसा कोई कारण नहीं है कि वह आपको स्वीकार करने आपको क्षमा करने और आपको अपना बनाने से इनकार करे।

टिप्पणियां

[1]बर्टन कॉफ़मैन, *क्रमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1968), 282-83. [2]वही, 158. [3]विलियम पी. बार्कर, *ऐज़ मैथ्यू सॉ द मास्टर* (वेस्टवुड, न्यू जर्सी: फ्लेमिंग एच. रेवल कं., 1964), 97, बर्टन कॉफ़मैन, *मैथ्यू,* में *दोहराया गया* 285.